हिन्दी साहित्य

पुस्तक	लेखक
1) पृथ्वीराज रासो (हिन्दी का प्रथम महाकाव्य - 'पिंगल शैली)	कवि चन्दबरदाई
2) हम्मीर रासो	सारंगधर
3) खुमान रासो	दलपत विजय
4) बीसलदेव रासो	नरपति
5) आल्हा खण्ड	जगनिक

दिल्ली का उदभव

- ढिल्लिका
  - 1051 AD (कुतुबमीनार के पास)
  - तोमर वंश के शासक बिलान देव (अनंगपाल तोमर II)
  - पृथ्वीराज तोमर (1167-1189 ई.) दिल्ली के तोमर शासक
  - पृथ्वीराज चौहान ने लालकोट का विस्तार करके 'रायपिथौरा' नामक किला बनवाया था, जिसे दिल्ली का पहला ऐतिहासिक शहर माना जाता है।
  - दिल्ली के अन्य नाम:
    - ढिल्लिका
    - योगिनीपुर
    - इंद्रप्रस्थ
- सात दिल्लियां
  - लाल कोट → अनंगपाल तोमर + पृथ्वीराज चौहान
  - सिरी किला → अलाउद्दीन खिलजी
  - तुगलकाबाद → ग्यासुदीन तुगलक
  - जहाँपनाह → मोहम्मद बिन तुगलक
  - फिरोजाबाद → फिरोजशाह तुगलक
  - दीनपनाह / पुराना किला → हुमायूँ + शेरशाह सूरी
  - शाहजहांनाबाद → शाहजहाँ

गुलाम वंश (1206-1290)

- कुतबी वंश (1206-1210)
- शम्सी वंश (1210-1266)
- बलवनी वंश (1266-1290)
- तुर्क

1. कुतुबुद्दीन ऐबक	2. आराम शाह	
3. इल्तुत मिश	4. रुकनुद्दीन फिरोज	
5. रजिया	6. बहरामशाह	
7. मसूदशाह	8. महमूद	
9. बलबन	10. कैकुबाद	11. कैयूमर्स

नामकरण

1. गुलाम वंश
  - तीन वंशों के संस्थापक गुलाम, हालांकि दासता से मुक्त
- मामलूक वंश
  - स्वतंत्र माता पिता से उत्पन्न संतान
- इल्बरी तुर्क
  - इल्तुतमिश व बलबन की इल्बरी तुर्क जाति
- आदि तुर्क
  - भारत में तुर्क सत्ता के संस्थापक

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210)

1. ऐबक

- दिल्ली सल्तनत का संस्थापक (1206) → भारत में तुर्क शासन का संस्थापक
- चंद्रमा का स्वामी
- तुर्क जाति
- निशापुर, ईरान के गुलाम (बंदगा) बाजार से काजी फखरुद्दीन ने खरीदा
  - मोहम्मद गौरी ने गजनी में खरीदा
  - 1208 में गौरी के भतीजे ग्यासुद्दीन महमूद ने दासता मुक्ति पत्र दिया

2. उपाधियां व पद

- गौरी द्वारा अमीर-ए-आखूर (अश्वशाला का अध्यक्ष)
- 1192 में गौरी द्वारा भारतीय प्रदेशों का इक्ता (प्रथम इक्ता)
- **कुरान ख्वा** - कुरान का सुरीला पाठ
- लाखबख्श व हातिम II - लाखों का दान
- पीलबख्श - हाथियों का दान

3. दिल्ली सल्तनत का संस्थापक

  - 25 जून 1206
  - कभी भी सुल्तान की उपाधि नहीं
  - "मलिक" तथा "सिपहसलार" के रूप में शासन
  - अपने नाम के सिक्के व खुतबा नहीं
  - राजधानी - लाहौर
  - मृत्यु - 1210, लाहौर (चौगान खेलते समय)

4. सैन्य उपलब्धियां :-

- गुलाम के रूप में
  - तराईन II (1192)
  - चंदावर (1194)
  - रणथंभौर (1195)
  - कालिंजर व जेजाकभुक्ति (1208)
- शासक के रूप में
  - गजनी के यल्दौज से युद्ध
  - मुल्तान के कुबाचा से युद्ध
  - बंगाल में खिलजी सरदारों को हराकर, अलीमर्दान को इक्तादार बनाया
- भारत में इस्लामी वास्तुकला
  - भारत गुंबद निर्माण व मेहराब निर्माण कला
  - रोम : बैजंतिया साम्राज्य
  - अरब
  - भारत
    - कुरान की आयत, कमल, स्वास्तिक आदि का प्रयोग
    - मानव व पशु आकृति का प्रयोग नहीं

सांस्कृतिक उपलब्धियां

- प्रमुख साहित्यकार
  - मुहम्मद इब्न मुबारकशाह:
    - शाजार ए आंसाब
    - आदाब- उल-मुलुक
  - हसन निजामी : ताज उल मासिर (1192-1228)
- कुव्वत-उल-इस्लाम (दिल्ली)
  - भारत की प्रथम मस्जिद
- अढ़ाई दिन का झोपड़ा मस्जिद (अजमेर)
  - चौहान राजा विग्रहराज चतुर्थ का संस्कृत विद्यालय (हरिकेली नामक संस्कृत नाटक)
- सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के नाम पर कुतुब मीनार (दिल्ली)
  - इल्तुतमिश द्वारा पूर्ण
  - फिरोजशाह तुगलक द्वारा पांचवी मंजिल

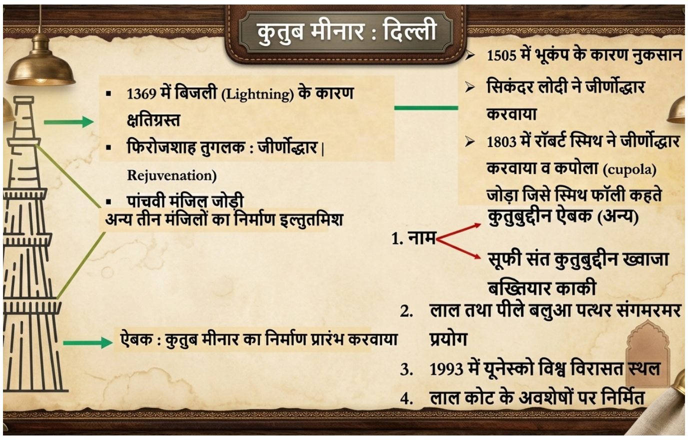

शम्सुद्दीन इल्तुतमिश (1211-1236)

दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक

1. सामान्य परिचय :-

- इल्बारी तुर्क (तुर्किस्तान)
- ऐबक का गुलाम व दामाद
  - ऐबक ने 1 लाख जीतल में खरीदा
  - **इल्तुतमिश:** गुलामों का गुलाम
  - **1205:** दासता मुक्ति
  - **1206:** बदायूं का इक्तादार

2. शासन स्थापना :-

- ऐबक के उत्तराधिकारी आरामशाह (कुतबी वंश का अंतिम शासक) को जूद के युद्ध (1211) में हराया
- **1211 में सुल्तान**
  - वास्तविक संस्थापक
  - सुल्तान की उपाधि (खलीफा द्वारा खिल्लत)
  - **राजधानी : दिल्ली**
  - **मृत्यु:** अप्रैल 1236

आरंभिक चुनौतियां

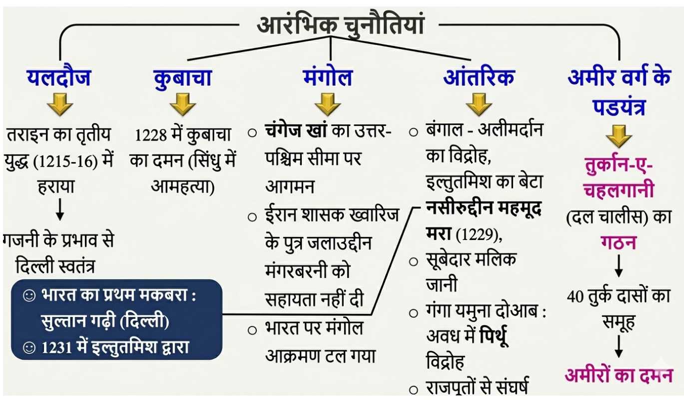

मंगोल

1. गोबी रेगिस्तान की बर्बर कबीलाई जाति
2. बंजारा जीवन शैली
3. अत्याधिक असभ्य
4. 1163 में तेमूचिन(चंगेज खां) का जन्म
5. मंगोल साम्राज्य के संस्थापक चंगेज खान ने 1219 में ख्वारज़्म पर विजय प्राप्त करने के दौरान ट्रांसऑक्सियाना पर आक्रमण किया
6. **चंगेज खां (1206-1227)** - महान व श्रापित

प्रशासनिक सुधार

1. फारसी राजतंत्र परंपरा को अपनाया :-

- वंशानुगत राजतंत्र
- रजिया को सुल्तान बनाया

2. केंद्रीय सेना (हम्स-ए-कुल्ब) का गठन

3. मुद्रा सुधार :-

- शुद्ध अरबी सिक्कों का प्रचलन
- **टंका:** 175 ग्रेन चांदी
- **जीतल:** तांबे का सिक्का
- सिक्कों पर टकसाल का नाम

4. न्यायिक सुधार

- दिल्ली में संगमरमर के शेर के गले में न्याय की घंटी
- नगरों में काजी व अमीर ए दाद की नियुक्ति

5. इक्ता व्यवस्था :-

- अरबी भाषा का शब्द
- अर्थ : राजस्व प्राप्ति हेतु आवंटित भूखंड
- भारत में इसे गौरी ने लागू किया - ऐबक को हांसी का इक्ता
- भारत में व्यवस्थित रूप से इल्तुतमिश ने लागू किया
- **व्यवस्था:** भूमि का आवंटन
  - Revenue collection
  - सेना का रख रखाव
  - कानून व्यवस्था
- **इक्ता प्रमुख : इक्तादार / वलि / मुक्ता / वजहदार**
  - सुल्तान द्वारा नियुक्ति
  - स्थानांतरणीय पद
  - वंशानुगत नहीं
  - खर्चे के बाद शेष राजस्व (फवाजिल), सुल्तान को
  - खर्चे के बाद शेष राजस्व (फवाजिल), सुल्तान को
- **इक्ता के प्रकार :-**
  - इक्ता-ए-तामलिक (सामान्य)
  - इक्ता एस्तिगलाल (बौद्धिक वर्ग को)

6. परिवर्तन:-

- **बलबन:** ख्वाजा ए दीवान को जांच अधिकारी
- **अलाउद्दीन खिलजी:** छोटी इक्ता समाप्त
- **मुहम्मद बिन तुगलक :**
  - वलि नामक पद का सृजन करके इक्तादार से प्रशासनिक व राजस्व अधिकार लिए
  - अब पूरा राजस्व पहले सुल्तान के पास
- फिरोज तुगलक : वंशानुगत अधिकार
- यह प्रणाली अकबर ने खत्म की

अन्य तथ्य

1. धार्मिक कट्टरता हालांकि प्रशासन में नहीं :-

- उज्जैन के महाकाल मंदिर को लूटा
- "भारत अरब नहीं है, इसे दारूल इस्लाम में परिवर्तित करना व्यवहार रूप से सम्भव नहीं है।"

2. सूफी संतों का सम्मान :-

- शेख नक्सवी 'सुगरा' - पिताजी कहकर संबोधन

3. वास्तुकला :-

- **सुल्तानगढ़ी मकबरा (दिल्ली):** पुत्र नसीरुद्दीन
- **नागौर (राजस्थान):** अतारकिन का दरवाजा
- **दिल्ली:** हौज-ए-शम्सी व मदरसा ए मुइज्जी

4. आदाब-ए-हर्ब (युद्ध कला का फारसी ग्रंथ) - फख्र ए मुदब्बिर द्वारा

5. कथन:-

- दिल्ली के सिंहासन का अपहरणकर्ता - **R P त्रिपाठी**
- गुलाम वंश का वास्तविक संस्थापक - **ईश्वरी प्रसाद**
- ऐबक ने खाका बनाया, इल्तुत. ने उसे मूर्त रूप दिया - **निजामी**
- ऐबक ने जिस दिल्ली सल्तनत की सीमा एवं रूपरेखा बनायी, उसका पहला सुल्तान इल्तुतमिश था - **हबीबुल्लाह**

Join SelectionWay GS Channel CLICK HERE Join SelectionWay GS Channel CLICK HERE

रजिया सुल्तान (1236-1240)

- 3 वर्ष 6 माह

1. पृष्ठभूमि :-

- इल्तुतमिश ने ग्वालियर अभियान के दौरान उत्तराधिकारी घोषित किया
- अमीरों और इल्तुतमिश की पत्नी शाह तुर्कान ने रजिया के भाई रुकनुद्दीन फिरोज को सुल्तान बनाया

- जलॉलात उद-दिन रज़ियॉ

2. रजिया :- लाल वस्त्र पहनकर, जनता से न्याय मांगा

- दिल्ली सल्तनत की प्रथम व अंतिम महिला सुल्ता
  - जनता द्वारा समर्थित सुल्तान
  - खुतबे में अपना नाम
  - रजियत नामक सिक्का
  - उपाधि - उदमत उल निस्वा
  - कुबा (कोट) व कुलाह (टोपी) पहनकर शासन

3. स्त्री होने के कारण अमीरों का षड्यंत्र:-

- गैर तुर्क (अबीसीनियाई, इथियोपिया) याकूत : अमीर-ए-आखूर (शाही अस्तबल का प्रमुख)
- **एत्गीन:** बदायूं का इक्तादार (प्रमुख विरोधी)
- **अल्तूनिया:** भटिंडा का इक्तादार (रजिया का पति)

4. 1238 :-

- ख्वारिज्म के सूबेदार मलिक हसन ने मंगोलों के विरुद्ध सहायता मांगी
- रजिया ने मात्र राजस्व सहायता दी

5. 13 अक्टूबर 1240 :-

- कैथल(हरियाणा) के पास डाकुओं द्वारा रजिया व अल्तूनिया की हत्या

कथन:-

- **सिराज:** उसमें एक शासक के रूप में सभी गुण थे, मगर स्त्री होना सभी गुणों पर भारी पड़ा"
- **निजामी:** इल्तुत के उत्तराधिकारियों में सर्वश्रेष्ठ
- **इसामी:** महिला को सिंहासन पर बैठने की बजाए चरखा चलाना चाहिए
- **ईश्वर टोपा:** रजिया-याकूत सम्बन्ध इसके पतन का कारण
- **हबीबुल्लाह:** रजिया का पतन तुर्क अमीर (अभिजात वर्ग) की विजय थी।

बहराम शाह (1240-1242)

1. "नायब-ए-मुमलकत" नामक नवीन पद
   - प्रथम - एत्गीन
   - शक्ति के तीन केंद्र
     - शक्ति के तीन केंद्र
     - वजीर
     - नायब
2. Mongol invasion (Tayar Bahadur) in Lahore in 1241
3. **10 मई 1242:-** अमीरों द्वारा हराया
   - तुर्क दास किरल खा ने स्वयं को सुल्तान घोषित किया
   - अमीरों द्वारा रुकनुद्दीन फिरोज के पुत्र अलाउद्दीन महमूदशाह को सुल्तान बनाया गया
   - अलाउद्दीन मसूद → सिक्कों पर बगदाद के अब्बासी खलीफा अल बिल्लाह का अंकन
4. बलबन ने 1246 में अलाउद्दीन मसूद शाह को मारा
   - नसीरुद्दीन महमूद → सुल्तान

नसीरुद्दीन महमूद (1246-1265)

1. इल्तुतमिश का पोता व शम्सी वंश का अंतिम शासक

2. बलबन के सहयोग से सुल्तान बना

3. इतिहासकार मिन्हाज सिराज → तबकात-ए-नासिरी

- नसीरुद्दीन महमूद को समर्पित
- सिराज ने महमूद को दिल्ली का आदर्श सुल्तान कहा
  - कारण
    - कुरान की प्रति तथा टोपी सिलकर जीवन यापन
    - एक मात्र पत्नी → बलबन की पुत्री हुजैदा
    - प्रसिद्ध कथन → हम राज्य के ट्रस्टी है, मालिक नहीं

4. प्रमुख घटनाएं :-

- बलबन का उत्कर्ष
  - उलुग खाँ की उपाधि (मंगोलों को पराजित करने के लिए)
  - नायब ए मुमलकात का पद
  - शासन पर पूर्ण नियंत्रण
- **1253 - भारतीय मुसलमान इमादुद्दीन रेहान को नायब बनाया परन्तु कालांतर में पुनः बलबन को**
- **1260** - मंगोल नेता हलाकू खां से संधि
- **1265 - मृत्यु**
  - बलबन
    - नया सुल्तान (1265-1287)
    - बलबनी वंश की स्थापना

ग़यासुद्दीन बलबन या बहाउद्दीन (1265-87)

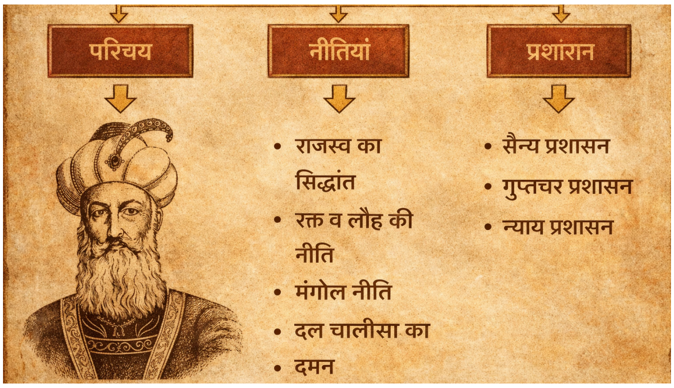

सामान्य परिचय

1. वास्तविक नाम → **बहाउद्दीन (इल्बरी तुर्क जाति)**
2. इल्तुतमिश का गुलाम → 1233 में ग्वालियर विजय के उपरांत
3. 1265 में दिल्ली का सुल्तान
4. **विभिन्न पद :-**
   - खाशदार (सुल्तान का निजी सेवक)-→ इल्तुतमिश
   - अमीर - ए - शिकार → रजिया
   - अमीर-ए-आखूर → बहरामशाह
   - अमीर - ए - हाजिब → अलाउद्दीन मसूदशाह
   - नायब-ए-मुमलिकात → नासिरुद्दीन मुहम्मद

राजत्व का सिद्धांत

राजत्व का सिद्धांत :-

- कारण - सुल्तान पद की गरिमा का ह्रास
- नीति
  - तुर्की नस्लवाद (इल्तुतमिश की तरह) - जब मैं किसी तुच्छ परिवार के व्यक्ति को देखता हूँ तो मेरे शरीर की प्रत्येक नाड़ी क्रोध से उत्तेजित हो जाती है
  - कठोर दंड विधान

- दैवीय राजत्व
  - अत्यंत निरंकुशता
    - सत्ता की प्राप्ति ईश्वर से

Join SelectionWay GS Channel CLICK HERE
Join SelectionWay GS Channel CLICK HERE

- नियामत ए खुदाई (ईश्वर का प्रतिनिधि)
- जिल्ले इलाही (ईश्वर का प्रतिबिंब)

बलबन : राजा का हृदय ईश्वर की कीर्ति को प्रतिबंधित करता है

※ नीति
- फारसी परंपराओं को अपनाया
  - स्वयं को अफरासियाब वंश से जोड़ा
  - नौरोज़ या नवरोज़ : ईरानी नववर्ष
  - सिजदा : सिर झुकाकर सलाम
  - पायबोस : पैर छूना
  - पहली बार फारसी परंपरा अपने वाला शासक इल्तुतमिश
- सख्त दरबारी अनुशासन
  - प्रतिबंध
    - हंसना
    - नृत्य व संगीत
    - मधपान
  - उसके चारों तरफ़ अंगरक्षक नंगी तलवारें लिए चलते थे

रक्त व लौह की नीति

1. **नीति:**- आंतरिक विद्रोह, अपराधों व अशांति को दूर करने हेतु कठोर हिंसक नीति
2. **मुख्य विद्रोह:-**
   - मेवातियों का दमन : डकैती में संलग्न
   - रुहेलखंड (कटेहर) विद्रोह का दमन
   - बंगाल में दास तुगरिल खां का विद्रोह (दिल्ली के बाहर बलबन का प्रथम अभियान) : बलबन ने अपने बेटे को बुगरा खां को बंगाल का इक्तादार बनाया
     - **बुगरा खां से बलबन ने कहा: सुल्तान का पद निरंकुशता का सजीव प्रतीक है**
   - **बदायूं इक्तादार:** मलिक बकबक की कोड़ों से पीटकर हत्या
   - **अवध इक्तादार हैबत खां:** 500 कोड़ों की सजा
   - अवध इक्तादार अमीन खा को मारकर, शरीर अवध के द्वार पर लटका दिया

मंगोल नीति

1. **मंगोल के प्रति रक्षात्मक नीति**
   - पुराने किलों की मरम्मत
   - दुर्ग निर्माण
   - शेर खां नामक अफगानी सेनापति
     - अत्याधिक योग्य
     - बलबन द्वारा हत्या
     - बरनी ने बलबन को खुफिया कातिल और बड़े पैमाने पर कत्ल करवाने वाला व्यक्ति कहा
2. **बलबन के बेटे शहजादा मुहम्मद की मृत्यु**

प्रशासनिक सुधार

1. नवीन सैन्य विभाग → दीवान ए अर्ज
   - प्रमुख
   - **आरिज-ए-मुमालिक**
   - प्रथम : इमाद उल मुल्क
2. **सैन्य प्रशिक्षण**
3. सशक्त गुप्तचर व्यवस्था : 'बारिद-ए-मुमालिक' (गुप्तचर विभाग का प्रमुख)

बलबन के उत्तराधिकारी

1. **कैकुबाद (1287-1290)**
   - बुगरा खां का पुत्र
   - अत्याधिक अयोग्य
   - नायब - मलिक निजामुद्दीन
2. **अंतिम शासक → शमशुद्दीन क्यूमर्स**
   - फिरोज खिलजी द्वारा हत्या व खिलजी वंश की स्थापना

खिलजी वंश (1290–1320)

सबसे कम शासन काल

- जलालउद्दीन खिलजी (1290-96) — संस्थापक
- अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316) — श्रेष्ठतम शासक
- शहाबुद्दीन उमर (1316)
- मुबारक शाह खिलजी (1316-1320)
- नसीरुद्दीन खुसरो शाह (1320)

सामान्य परिचय

1. **खिलजी →** निम्न श्रेणी के तुर्क → पलायन → अफगानिस्तान (खल्ज क्षेत्र) → खिलजी → उत्तर पश्चिम सीमा में सल्तनत के सिपाही
2. **खिलजी क्रांति: RP त्रिपाठी**
   - जून 1290 में किलोखरी (कैकुबाद द्वारा निर्मित) में फिरोज खिलजी का राज्याभिषेक
   - प्रशासनिक प्रणालियों में आमूल चूल परिवर्तन
     - नस्लीयता के स्थान पर योग्यता को प्राथमिकता
     - धर्म व राजनीति का पृथक्करण
     - प्रशासन में तुर्की अमीर वर्ग के एकाधिकार की समाप्ति

जलालुद्दीन फिरोज खिलजी (1290-96)

1. **खिलजी वंश का संस्थापक → कृपालु या दयालु**
2. **13 जून 1296**
   - किलोखरी (दिल्ली)
     - कैकुबाद द्वारा निर्मित
   - 70 वर्ष की आयु में राज्यारोहण
     - सबसे वृद्ध सुल्तान
3. एक वर्ष तक किलाखोरी में रहा
4. बलबन के सिंहासन पर नहीं बैठा
5. सुल्तान बनने से पहले → क्यूमर्स का वजीर
6. **उदारवादी नीतियां :-**
   - तुर्क सरदारों को उच्च पद
   - परिवार के सदस्यों को उच्च पद
   - विद्रोहियों (कड़ा इक्तादार मलिक छज्जू), ठगों व चोरों के प्रति उदार व्यवहार
   - क्रूरता की नीति का त्याग
   - अमीर-ए-हाजिब, मलिक चप से कहा - मुसलमानों का रक्त नहीं बहा सकता

दीवान ए वकूफ़ (व्यय विभाग) का गठन

7. **उदारवादी नीति का अपवाद → ईरानी सूफी संत सिदीमौला की हत्या**
   - कारण - अत्याधिक लोकप्रियता
   - हाथियों से कुचलवाया
   - गुरु - बाबा फरीद
   - बरनी - अत्यंत अन्यायपूर्ण कृत्य

8. **महत्वपूर्ण घटनाएं:-**

❖ मंगोल नेता अलगू खां के साथ 4000 मंगोलों का आत्मसमर्पण (नव मुसलमान)
   - जलाल के बेटे अर्कली खा (पूर्व का रुस्तम) ने हराया
   - मंगोलपुरी (दिल्ली) में बसाया

❖ रणथंभौर अभियान (1291)
   - हम्मीर देव चौहान के सेनापति गुरदास सैनी की सहादत
   - जलाल खिलजी - ऐसे 10 किलो को भी मै मुसलमान के एक बाल के बराबर महत्व नही देता

❖ **देवगिरी अभियान (महाराष्ट्र, 1296) : जलाल की आज्ञा के विपरीत**
- भतीजा अलाउद्दीन खिलजी (कड़ा मानिकपुर)
- देवगिरी शासक - यादव वंशीय रामचंद्र व उसका बेटा सिंहदेव (शंकरदेव)
- अत्याधिक धन की प्राप्ति
- दक्षिण भारत में सल्तनतकाल का प्रथम अभियान

9. 1296 :- अलाउद्दीन खिलजी ने कड़ामानिकपुर (प्रयाग) में जलाल की हत्या

❖ बरनी द्वारा इस घटना की अत्यधिक आलोचना की गई

10. कथन:-
- **K.S. लाल –** "कोई भी व्यक्ति जिसने राजमुकुट धारण किया, वो इतना अयोग्य नहीं हुआ, जितना जलालुद्दीन था "
- **SB पाण्डेय** - "सल्तनत में पहली बार उदार निरंकुशवाद नीति अपनायी "
- **बरनी** - राजत्व उसके लिए धोखा था व वैभव अस्थायी"
- **हबीबुल्लाह** - - " सुल्तान का हृदय अशोक के समान था "
- **S. राय** - कुपात्र सुल्तान के रूप में आया व भद्र पुरुष रूप में कार्य किया

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316)

1) परिचय

2) आरंभिक समस्याएं

3) साम्राज्य विस्तार
- लेनपूल - सल्तनत का समुद्रगुप्त

4) सुधार
- राजत्व
- बाजार नियंत्रण व्यवस्था
- सैन्य
- राजस्व

बलबन ने सल्तनत का सुदृढ़ीकरण किया जबकि अलाउद्दीन के समय सल्तनत के साम्राज्यवादी युग का आरंभ हुआ

सामान्य परिचय

1. मूल नाम → अली गुरुशास्प
2. जलालउद्दीन खिलजी का भतीजा व दामाद
   - कड़ा-मानिकपुर इक्तादार व अमीर-ए-तुजुक
3. **उपाधियां:-**
   - सिकन्दर-ए-सानी : द्वितीय सिकंदर
   - जिल्ले इलाही
   - यामीन-उल-खिलाफत नासिरी-अमीर-उल-मौमनिन
4. **राज्याभिषेक**
   - प्रथम - जुलाई 1296 - कड़ा (प्रयागराज)
   - द्वितीय - अक्टूबर 1296 - लाल महल (बलबन द्वारा दिल्ली में निर्मित)

-: बरनी :-

'शहीद सुल्तान के कटे हुए मस्तक से अभी रक्त टपक ही रहा था कि, शाही चंद्रोबा अलाउद्दीन के सिर पर रखा गया और उसे सुल्तान घोषित कर दिया गया।'

5. **प्रथम सुल्तान जिसने धर्म व राज्य पृथक किया**
6. **मृत्यु :- 5 जनवरी 1316**

अलाउद्दीन खिलजी के अधूरे स्वप्न
- सिकंदर की तरह विश्व विजय का सपना
- सिकन्दर-ए-सानी : द्वितीय सिकंदर
- नवीन धर्म की स्थापना का प्रयास
- कोतवाल अलाउल-मुल्क की सलाह पर उसने अपना विचार त्याग दिया।

राजत्व का सिद्धांत
- **निरंकुशता** → अत्याधिक निरंकुशता (बलबन से ज्यादा)
  - बलबन का राजत्व ताज की प्रतिष्ठा को स्थापित करने हेतु था
  - अलाउद्दीन का राजत्व सामाज्य विस्तार अथवा सामाज्यवाद की उद्देश्य की पूर्ति हेतु था।
- **अत्यंत कठोर न्याय विधान**
- **ईश्वर के स्थान पर सामर्थ्य को शक्ति का स्त्रोत** → खलीफा से अनुमति नहीं, यद्यपि स्वयं को **खलीफा का नायब** कहा
- **नस्लवाद के स्थान पर योग्यता** → हिंदुओं को प्रशासन में स्थान
  - जियाउद्दीन बरनी : जब उसने राजत्व प्राप्त किया तो वह शरीयत के नियमों से पूर्णतया स्वतंत्र था
- **धर्म व राजनीति का पृथक्करण** →
  - ★ इस्लाम का सम्मान परन्तु अंध अनुयायी नहीं
  - ★ शरीयत के स्थान पर परिस्थिति

अलाउद्दीन खिलजी के कथन

मैं और पूर्वज मुस्लिम रहे, मगर मैं वही करूंगा जो राज्य के हित में है, चाहे वो शरीयत के खिलाफ ही क्यों न हो, कयामत के दिन अल्लाह मेरे साथ क्या व्यवहार करेगा मुझे नहीं पता

आरंभिक समस्याएं

1. **मुल्तान में जलाल के वंशज**
   - अर्कली खां, मलिक ए जहां
   - जफर खा व उलूग खा द्वारा हत्या
2. **नव मुसलमानों (मंगोलों) का विद्रोह → गुजरात शासक कर्णदेव को हटाने के बाद**
3. **दिल्ली में हाजी मौला का विद्रोह**
4. **अमीरों के षडयंत्र को रोकने हेतु 4आदेश :-**
   - सामंतों की शक्ति कमजोर करने हेतु अनेक आदेशों की श्रृंखला
     - सामंतों की शक्ति कमजोर करने हेतु अनेक आदेशों की श्रृंखला
   - **गुप्तचर प्रणाली (बरीद / मुनिहान)** - " अमीर इतने भयभीत रहते थे कि सांकेतिक भाषा में बात करते थे"
   - मद्य निषेध
   - अमीरों के वैवाहिक सम्बन्धों हेतु लिखित अनुमति ~ अमीरों के बाद इनके पुत्र सुल्तान के दास समान होंगे।

अलाउद्दीन की मंगोल नीति

सर्वाधिक मंगोल आक्रमण : बलबन के संरक्षणवाद के विपरीत रक्तपात की नीति

मंगोल आक्रमण	वर्ष	मंगोल	सुल्तान
प्रथम आक्रमण	1297-98	कादर खान	उलूग खाँ और जफर खान
द्वितीय आक्रमण	1299	साल्दी	जफर खान
तीसरा आक्रमण	1299	कुतलुग ख्वाजा	➤ कीली का युद्ध (जफर खान) ➤ मंगोल का दिल्ली तक आगमन ***ऐ, क्या तुमने जफर को देखा है? जो तुम पानी नहीं पीते हो***
चौथा आक्रमण	1303	तार्गी	अलाउद्दीन खिलजी
पाँचवाँ आक्रमण	1305	अली बेग	अमरोहा का युद्ध
छठा आक्रमण	1306	कबक खाँ	मलिक काफूर

अलाउद्दीन के अभियान

1. **उत्तर भारत**
   1. गुजरात (1299) 2. रणथंभोर (1301)
   3. चित्तौड़ (1303) 4. मालवा (1305) 5. जालौर (1311)
2. **दक्षिण भारत**
   1. वारंगल (1303-1310)
   2. देवगिरी (1308)
   3. द्वारसमुद्र या होयसल (1310)
   4. पाण्डय या मआबर अभियान (1311)
      - अप्रत्यक्ष नियंत्रण की नीति
      - लेनपूल : सल्तनत काल का समुद्रगुप्त

उत्तर भारत के अभियान

अभियान	शासक	अलाउद्दीन	अन्य तथ्य
1) गुजरात (1299)	कर्णदेव	उलूग खां तथा नुसरत खां	➤ जैसलमेर में भाटी मूलराज की शहादत ➤ सोमनाथ मंदिर की लूट ➤ नुसरत खां ने 1000 दीनार में मलिक काफ़ूर को खरीदा ➤ कर्णदेव ने देवगिरी में शरण ली ➤ कर्णदेव की रानी कमलादेवी (मलिक ए जहां) से अलाउद्दीन खिलजी ने विवाह किया ➤ सूबेदार - अल्प खां
2) रणथंभौर (1299-1301)	हम्मीर देव (सेनापति : धर्म सिंह व भीम सिंह)	➤ अल्प खां ➤ उलूग खां ➤ नुसरत खां ➤ अलाउद्दीन	➤ **कारण**: नव मुसलमानो के विद्रोह हम्मीर देव द्वारा समर्थन ➤ **पद्म तालाब:** रानी रंगदेवी तथा पुत्री देवल का जौहर ➤ हम्मीर देव ने अपना सिर काटकर शिव को समर्पित किया ➤ प्रशासक : उलूग खां ➤ धोखा : रतिपाल व रणमाल
3) चित्तौड़गढ़ (1303)	शासक : राजा रतन सिंह (रावल शाखा)	अलाउद्दीन खिलजी	➤ राजा रतन सिंह की पत्नी पद्मिनी तथा 1600 महिलाओं का जौहर ➤ मलिक मुहम्मद जायसी : पद्मावत ➤ 30,000 से अधिक लोगों का नरसंहार ➤ शासक : खिज्र खान ➤ अष्टधातु (आठ धातुओं से बना) द्वार
4) मालवा (1305)	परमार राजा महलकदेव व सेनापति हरनंद (कोका)	➤ आइन-उल-मुल्क मुल्तानी	
5) जालौर (1311)	कान्हड़देव	➤ आइन-उल-मुल्क मुल्तानी ➤ शम्स खां ➤ कमालुद्दीन गुर्ग	➤ रानी नैतल का जौहर ➤ शासक - कमालुद्दीन गुर्ग

दक्षिण भारत के अभियान

- मुख्य सेनापति - मलिक काफ़ूर (कार्यालय : देवगिरी)
  - **मलिक नायब व वाजिर**

वारंगल (1303-1310)	काकतीय शासक प्रताप रूद्रदेव	➤ मलिक जूना व छज्जू (1303) ➤ मलिक काफ़ूर (1310)	➤ प्रथम अभियान में राजा प्रताप रूद्रदेव की विजय ➤ मलिक काफ़ूर को कोहिनूर हीरा मिला
देवगिरी (1308)	यादव वंशीय राजा रामचंद्र देव	➤ मलिक काफ़ूर ➤ अल्प खां	➤ **कारण** - कर भुगतान ना करना + कर्ण देव व देवल देवी की शरण ➤ देवल देवी का विवाह खिज खां (AK का पुत्र): **आशिका (खुसरो)** ➤ रामचंद्र को 'राय रायन' की उपाधि तथा नवसारी (गुजरात)
द्वारसमुद्र या होयसल (1310)	वीर वल्लाल III	➤ मलिक काफ़ूर (रामचंद्र देव: सहायक)	➤ वीर वल्लाल द्वारा जजिया ➤ वीर बल्लाला के सेनापति हरिहर (हक्का) तथा बुक्का राय
पांड्य (1311)	वीर पंड्या	मलिक काफ़ूर	➤ वीर पंड्या जीवित बच गया ➤ मलिक को संपत्ति मिली

Join SelectionWay GS Channel CLICK HERE Join SelectionWay GS Channel CLICK HERE

अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नियंत्रण व्यवस्था

मूल्य निर्धारण योजना

जानकारी

1. तारीख-ए-फिरोजशाही (बरनी)
2. ख़ज़ाइन-उल-फुतूह (अमीर खुसरो)
3. फुतूह-उस-सलातीन (इसामी)
4. रेहला (इब्नबतूता)

1. **योजना:**- ज्य द्वारा वस्तुओं वस्तुओं का मूल्य निर्धारण + माप तोल का मानकीकरण
2. **उद्देश्य:**- साम्राज्यवादी उद्देश्य हेतु गठित विशाल सेना को कम वेतन देते हुए संतुष्ट रहना
3. **कार्यक्षेत्र :**- दिल्ली व संलग्न क्षेत्र
4. **विशेषताएं**

- तीन प्रकार के बाजार
  - मंडी
  - सराय ए अदल
  - घोड़ा+दास
- कठोर दंड – 2 × मांस
- तीन स्तरीय रिपोर्ट – सुल्तान
  - सद्र ए रियासत
  - शहना
  - बरीद
- राशन व्यवस्था - प्रथम सुल्तान

सुल्तान

प्रथम : मलिक याकूब

दीवान ए रियासत :- सद्र-ए-रियासत

तीन बाजार

3 शाहना (बाजार अधीक्षक) → पंजीकरण, कालाबाजारी रोकना

सहायता

- बरीद (गुप्तचर प्रमुख) → मुनहियान (खुफिया पुलिस)
- नाज़िर (माप तौल)
- परवाना नवीस (परमिट)
- मुहतसिब (जानाचार नियंत्रण/सेंसर)

- लेनपूल - इस व्यवस्था के कारण सुल्तान महान राजनीतिक अर्थशास्त्री था।
- बरनी - एक ऊँट का दाम एक देग (जीतल) रह गया था, परन्तु वो एक दंग किसी के पास नहीं था।
- निजामी - ये अधिनियम सल्तनतकाल की सर्वतेदम उपलब्धि है।

भू राजस्व सुधार

राजस्व मंत्री : शर्फ़ कियानी (ईरानी)

1) सभी भूमि अनुदान वापस लिए

- मिल्क (राज्य प्रदत्त संपत्ति)
- वक्फ (धार्मिक अनुदान)
- इनाम(पुरुस्कार)
- इदरात (पेंशन अनुदान)

खालसा भूमि

- सल्तनत काल में सर्वाधिक

साम्राज्यवाद व आर्थिक संवृद्धि

2) छोटे जमींदारों (खुत / मुकद्दम /चौधरी) की समाप्ति → ग्रामीण राजस्व वसूली हेतु

- नया विभाग : दीवान ए मुस्तखराज → राजस्व अधिकारियों की जांच
- अधिकारी →
  - मुहसिल आलिम
  - गुमाश्ता

3) भूमि पैमाईश(जबीता) → मसाहत प्रणाली (मापक इकाई बिस्वा) → भूमि का मापन करने के बाद भू राजस्व का निर्धारण

- उपज का 50%
- नकद

3) नवीन कर →
- घरी (आवास कर)
- चरी कर (दधारू पशु)

सैन्य सुधार

1) स्थाई सेना व नकद वेतन

- ※ स्थानीय सेना (हस्म ए मुर्रतब) का गठन करने वाला **प्रथम सुल्तान**
- ※ मुर्रतब : निरीक्षण पश्चात नियुक्ति सैनिक
- ※ **नकद वेतन** : वेतन कम, परन्तु मूल्य नियंत्रण प्रणाली के कारण पर्याप्त → 1 सैनिक + 1 घोड़ा - 234 टंका / वर्ष → हुलिया प्रथा, दाग प्रथा

2) सेना भर्ती विभाग → आरिज ए मुमालिक

3) खम्म (लूट का धन) → सुल्तान का हिस्सा 1/4 भाग से बढ़ाकर ¾ (75%) किया

अलाउद्दीन : वास्तुकला

1) जमैयत खाना मस्जिद : दिल्ली

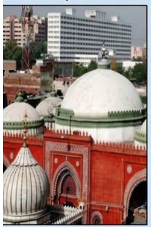

2) अलाई दरवजा → इस्लामी वास्तुकला का रत्न → कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद के दक्षिणी प्रवेश द्वार, दिल्ली

3) सीरी का किला : दिल्ली

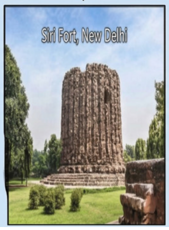

4) हजार खंभा महल दिल्ली के सीरी किले

मृत्यु

मृत्यु

- 5 जनवरी 1316 (मलिक काफ़ूर का षड्यंत्र)
  - पुत्र खिज्र खां को मारा
  - अल्प खां को मारा
  - शाहबुद्दीन उमर को सुल्तान बनाया (4 माह)
- अंतिम समय बहुत बुरा बीता
  - फरिश्ता : सुल्तान पागल सा हो गया था, वह अपना स्वयं का मास खाने लगा था

यूरोपीय यात्री मार्को पोलो (इटली) : पांडय राज्य(1273)

- हम्मीर हठ (चन्द्र शेखर)
- हम्मीर रासौ (जोधराज)
- हम्मीर महाकाव्य (नयनचन्द्र सूरि)
- श्रृंगार हार (हम्मीर स्वयं)
- रूष परीक्ष (विद्यापति)
- हम्मीर बंधन (अमृत कैलाश)
- हम्मीरायण (व्यास भाण्ड)
- कान्हड़देव प्रबन्ध - पद्मनाभ
- तारीख-ए-फरिश्ता - फरिश्ता
- जालौर प्रशस्ति - कान्हड़देव की उपलब्धियां “राजस्थान की प्रयाग प्रशस्ति “

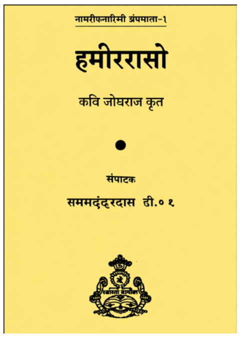

प्रमुख उत्तराधिकारी

1. **अलाउद्दीन खिलजी**
2. **शाहबुद्दीन उमर (1316)**
   - मुबारक शाह द्वारा उमर व मलिक काफ़ूर की हत्या
3. **मुबारक शाह (1316-1320)**
   - प्रथम सुल्तान जिसने स्वयं को खलीफा घोषित किया
   - नग्न अवस्था व स्त्री भेष में दरबार में
   - नग्न स्त्रियों व पुरुषों की संगत
   - बराडू (गुजरात के परिवर्तित मुस्लिम) को नियुक्तियां - सेना में
4. **अंतिम - नसीरुद्दीन खुसरो शाह (पैगंबर का सेनापति)**

- मूल नाम - हसन खां
- बरादू मुसलमान
- 'इस्लाम का शत्रु'
- गाजी मलिक (ग्यासुद्दीन तुगलक) द्वारा हत्या

बराद् क्रान्ति का विश्लेषण

- बरनी ने खुसरो शाह के राज्यारोहण को 'हिन्दू-मुसिलम संघर्ष' का रूप व 'हिन्दू क्रान्ति' का रूप देते हुए कहा कि '"खुसरो के राज्यारोहण ने सच्चे विश्वासियों के लिए अकथनीय क्लेशों के युग का सूत्रपात किया।
- राज्यारोहण के 5 या 6 दिन पश्चात् महल में मूर्तिपूजा प्रारम्भ हो गई।
- मस्जिदों के मेहराबों में रखी गई मूर्तियों के आसन के रूप में प्रयुक्त की गई।"
- इब्नबतूता लिखता है कि 'उसने गौहत्या का निषेध कर दिया और मुसलमानों को अपने घरों की दीवारों को गोबर से लीपने जो एक हिन्दू प्रथा है-का आदेश दिया।"
- खुसरो खाँ के विरोधियों ने उसके विरुद्ध 'इस्लाम खतरे में हैं।' के नारे लगाये तथा उसे 'इस्लाम का शत्रु' कहा

तुगलक वंश (1320-1414)

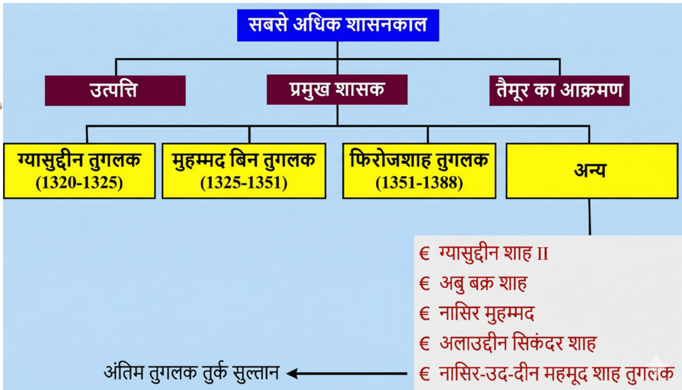

1. **तुगलक : उत्पत्ति → तुगलक(उपाधि): तुर्क (करौना शाखा)**

- ❖ मिश्रित जाति
  - तुर्क पिता
  - अतुर्क माता

2. **दिल्ली सल्तनत का अंतिम तुर्क राजवंश**
3. **सबसे लंबी शासनावधि → 1320-1414 (94 वर्ष)**

गाजी मलिक या ग्यासुद्दीन तुगलक (1320-1325)

1. **तुगलक वंश का संस्थापक → 8 सितंबर 1320**
2. **माता पिता**
   - पिता - मलिक कुतलुग (बलबन के दास)
   - माता - हिंदू महिला (जाट)
3. **उपाधि**
   - मलिक ए गाजी (29 बार मंगोलों को हराया)
4. **कार्यकाल:-**
   - जलालुद्दीन खिलजी → अंगरक्षक
   - अलाउद्दीन खिलजी
     - अमीर उल खेल (घोड़ा विभाग)
     - दीपालपुर की इक्तादारी
     - सीमारक्षक
     - गाजी (प्रथम सुल्तान)

मैं एक तुच्छ व्यक्ति था, जिसे सुल्तान जलालुद्दीन व अलाउद्दीन ने अपने निकटवर्ती स्तर तक उठाया

5. **सिंहासनारोहण:-**
   - 1320 → खुसरो खाँ (खुसरो शाह)की हत्या
   - सुल्तान बनने से इंकार → "मेरा धनुष और मेरा बाण ही मेरे मुकुट और सिंहासन है
   - अमीरों के निवेदन पर सुल्तान बना
     - 8 सितंबर 1320
     - सितून महल (सीरी)
     - अमीरों को सददास (ख़्वाजा-ताश) घोषित किया
6. **सुधार :-**
   - शासन हेतु मध्यवर्ती नीति → रस्म-ए-मियाना
   - कृषि व हस्तशिल्प के विकास पर ध्यान देने वाला प्रथम सुल्तान
     - नहर निर्माण (प्रथम)
     - अलाउद्दीन खिलजी की मसाहत व्यवस्था समाप्त
     - नक्श प्रथा के आधार पर भू राजस्व कटौती - 1/3 या 1/5
     - बूद व नाबूद - फसल खराब होने पर मुआवजा व Records
   - खुत/मुकद्दम/चौधरी के अधिकारों को पुनः लौटाया
   - अमीरों की भूमि पुनः लौटा दी
7. **सैन्य सुधार:-**
   - दाग व हुलिया प्रथा को और कठोरता से लागू किया।
   - मुक्ता द्वारा सैनिकों के वेतन को काटने की कुप्रथा को बन्द किया
     - वेतन रजिस्टर : वसिलात-ए-हस्म
8. **अत्यंत कठोर न्याय विधान**
9. **डाक व संचार :-**
   - सड़कों का पुनः निर्माण
   - डाक व्यवस्था को संगठित रूप देने का कार्य

11. **दिल्ली के समीप तुगलकाबाद या छप्पन कोट (रोमन शैली) की स्थापना**

खुसरो :- ग्यासुद्दीन अपने मुकुट के नीचे सौ पण्डितों का शिरोस्त्राण रखता

बरनी :- "ग्यासुद्दीन एक आदर्श सुल्तान था, ऐसा सुल्तान न पहले हुआ, और न ही आगे होगा "।

बरनी :- "ग्यासुद्दीन की न्याय व्यवस्था के कारण एक भेड़िया भी एक भेड़ की तरफ नहीं देख सकता था।"

11. **प्रमुख विद्रोह :-**

विद्रोह	शासक	सल्तनत
1) वारंगल (1321-23)	प्रताप रूद्रदेव	➤ उलूग खां ('जूना खाँ' या मुहम्मद बिन तुग़लक़)
2) उड़ीसा/जाजनगर (1324)	भानुदेव II	➤ उलूग खां ('जूना खाँ' या मुहम्मद बिन तुग़लक़)
3) मंगोल आक्रमण (1324)	शेर मुगल	➤ मलिक वजीर
4) बंगाल (1322)	बुगरा खां का पुत्र ग्यासुद्दीन बहादुर	➤ ग्यासुद्दीन तुगलक - अंतिम अभियान ➤ निजामुद्दीन औलिया : 'हुनुज दिल्ली दुरस्त'

12. **मृत्यु → 1325, अफगानपुरी (दिल्ली)**
    - मुहम्मद बिन तुगलक (जूना खां या उलूग खां) द्वारा निर्मित लकड़ी के महल के गिर जाने से

इतिहासकारों का विश्लेषण

- ❖ आकस्मिक घटना
  - **बरनी - बिजली गिरने से मण्डप गिरा**
  - याहिया सरहिन्दी - दैवीय प्रकोप
  - **फरिश्ता** -
  - मेंहदी हुसैन
  - निजामी
  - आरिफ कंधारी
- ❖ मोहम्मद बिन तुगलक द्वारा योजनाबद्ध
  - इब्नबतूता
  - फजल
  - बदायूनी
  - बदायूनी
  - वुल्जेग हेग
  - इसामी

Join SelectionWay GS Channel CLICK HERE
Join SelectionWay GS Channel CLICK HERE

मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351)

सामान्य परिचय	राजस्व सिद्धांत	कृषि सुधार	5 योजनाएं	अन्य तथ्य

सामान्य परिचय

1. **तुगलक वंश का द्वितीय सुल्तान**
2. **मूल नाम → मलिक फखरुद्दीन जौना खां**
3. **उपाधियां**
- उलूग खां (ग्यासुद्दीन तुगलक द्वारा)
- मुहम्मद बिन तुगलक शाह
  - सुल्तान
- अबुल मजाहिद
- अल सुल्तान जिल्ली
4. **राज्यारोहण → मार्च 1325, तुगलकाबाद**
   - सुल्तान
   - 40 दिन के राजकीय शोक के बाद दिल्ली(लाल महल) में प्रवेश

सल्तनत का सबसे शिक्षित सुल्तान

कथन - 'मेरे स्नेहपूर्ण दृष्टि में मेरे साम्राज्य का प्रत्येक वृद्ध पुरुष मेरे पिता के समान है और प्रत्येक युवक बहराम खाँ के समान मेरा भाई है।

राजत्व सिद्धांत

1. **दैवीय सिद्धांत → सिक्कों पर जिल्ले इलाही**
2. उलेमा व कुलीन अमीरों को राज्य की नीतियों से दूर रखा
3. निम्न कुल के अमीरों को प्रशासन में शामिल किया
   - वाइन डिस्टिलर अजीज खुम्मार
   - एक नाई (फ़िरोज़ हज्जाम)
   - एक रसोइया (मनका तब्बाख)
   - दो मालि (लाधा और पीरा)
4. **प्रशासन में नियुक्ति का आधार**
   - योग्यता
   - बरनी द्वारा आलोचना
5. **खलीफा से संबंध**
   - आरंभ में खिल्लत नहीं
   - मिस्र के खलीफा के वंशज
   - ग्यासुद्दीन महमूद को दिल्ली बुलाया

तारीख-ए-फिरोजशाही - बरनी
किताब-उल-रेहला - इब्नबतूता (अरबी)
मुमालिक-उ-अमसार - अबसार (अरबी)
तारीख-ए-मुबारकशाही - याहिया सरहिंदी

कृषि सुधार

1. **कृषि विभाग → दीवान-ए-कोही**
   - अनुर्वर भूमि को उपजाऊ बनाना
   - फसल चक्र
   - 60 से 100 वर्ग किमी क्षेत्र को 3 वर्षों में
2. **तकाबी ऋण(सोनधर) → किसानों को ब्याजमुक्त ऋण**
3. **अकाल संहिता**

5 योजनाएं

1) दिल्ली से दौलताबाद राजधानी परिवर्तन (1327)
2) सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन (1329-30)
3) खुरासान अभियान (1332-34)
4) कराचिल अभियान (1332-34)
5) दोआब क्षेत्र में कर वृद्धि (1335-36)

MBT : मूर्ख बुद्धिमान सुल्तान, रक्तपिपासु, पागल व स्वप्नशील

1. **राजधानी परिवर्तन → दिल्ली से दौलताबाद**
   - मूल नाम - देवगिरी
   - मुबारकशाह - कुत्बाबाद
   - MBT - दौलताबाद(कुव्वत उल इस्लाम)

1.1 राजधानी परिवर्तन
   - दूरी - 700 मील (40 दिन)
   - क्रियान्वयन
     - प्रत्येक 2 मील पर सराय
     - वृक्षारोपण
     - सूफी संत

क्रम -: MBT की माता मखदूत खा → उलेमा → जनता

राजधानी परिवर्तन

- कारण
  - **बरनी ~** दौलताबाद साम्राज्य के केन्द्र में था, जिसके दक्षिण भारत पर प्रभावी नियंत्रण रखा जा सकता था
  - **इब्नबतूता ~** दिल्ली की जनता अभद्र भाषा युक्त खत सुल्तान को लिखती थी।
  - **इसामी ~** सुल्तान दिल्ली की जनता से क्रुद्र था
  - **गार्ड ब्राउन ~** मंगोल आक्रमण से सुरक्षा
- प्रभाव
  - उत्तरी व दक्षिणी भारत की संस्कृति का मिश्रण
  - दक्षिणी भारत में सूफी इस्लाम।
  - प्लेग से सैन्य क्षति
  - जनता विरुद्ध हुई।

सांकेतिक मुद्रा

1. **सांकेतिक मुद्रा** → अंकित मूल्य > वास्तविक मूल्य
2. **विश्व की प्रथम सांकेतिक मुद्रा → चाओचान** → चीन में मंगोल कुबलाई खान (1260)
3. योजना → चांदी के टंके के स्थान पर समान मूल्य का कांसे/तांबे सिक्का
4. कारण
   - **बरनी** - राजकोष का खाली होना
   - **ईश्वर टोपा** - वैश्विक चांदी की कमी
   - **एडवर्ड थॉमस** - MBT - प्रिंस ऑफ मनीअर्स

5. प्रभाव
   - पूर्णत: असफल
   - **बरनी -** हर हिन्दू के घर में टकसाल
   - **बरनी -** तुगलकाबाद के बाहर जाली सिक्कों का ढेर लग गया

युद्ध अभियान

- **खुरासान (1332-34)**
  - ईरान का पूर्वी भाग तथा अफगानिस्तान
  - 3.70 लाख की सेना का गठन
  - मध्य एशिया में राजनीतिक केंद्रीयकरण
  - असफल
  - 2 लाख 70 हजार सैनिक हटाए गए
- **कराचिल (1332-34)**
  - कुमायूं (उत्तराखंड)
  - हिमालय के हिंदुशाही वंश तथा चीन के विरुद्ध
  - नेता - खुसरो मलिक
  - 10,000 सैनिकों में से मात्र 3 वापस लौटे

दोआब में कर वृद्धि

1. **1335-36 में दोआब कर में वृद्धि**
   - मानक उपज के आधार पर
   - कठोरता से लागू
2. **पूर्णतः असफल :-**
   - किसानों ने कृषि छोड़ दी।
   - साम्राज्य में अनाज संकट उत्पन्न
   - आवश्यक वस्तुओं की कीमतें अत्यधिक बढ़ गयी, 7 वर्ष का अकाल पड़ा।
   - राज्य भर में किसान विद्रोह हुए, जिनके दमन में अत्यधिक आर्थिक व सैन्य क्षति हुई।

बलवन	दीवान ए अर्ज (सैन्य)
जलालुद्दीन खिलजी	दीवान ए बकूफ़ (व्यय विभाग)
अलाउद्दीन खिलजी	दीवान ए रियासत (आर्थिक) + दीवान ए मुस्तखराज (कर)
मोहम्मद बिन तुगलक	दीवान ए कोही

सूफी संतों के सम्मान की नीति

1. **मुहम्मद बिन तुगलक → शेख अलाउद्दीन का शिष्य**
2. सल्तनत का पहला शासक
   - अजमेर में शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह
   - बहराइच में सालार मसूद गाजी के मकबरे में गया
3. **मुहम्मद बिन तुगलक : संतों की कब्र पर मकबरे बनवाए**
   1. बदायूँ
   2. दिल्ली
   3. मुल्तान
   4. अजुधन
   5. मीरन मुलहीम
   6. शेख निज़ामुद्दीन औलिया
   7. शेख रुकनुद्दीन
   8. शेख मुल्तान

   बेगमपुर मस्जिद – नई दिल्ली

अन्य तथ्य

1. अफ्रीकी (मोरक्को) यात्री इब्न बतूता लगभग 1333 ई. में भारत आया।
   - दिल्ली का काजी
   - राजदूत के रूप में चीन भेजा
   - पुस्तक : **रेहला**
   - भारतीय डाक व्यवस्था दो प्रकार :
     1. उलुक : अश्व डाक व्यवस्था
     2. दावा : पैदल डाक व्यवस्था
   - सती होने के दृश्य का वर्णन
2. जिन प्रभु सुरी नामक जैन साधु क सम्मान
3. **ज़िया नक्शबी → तूती नामा**
   - संस्कृत कथाओं का फारसी में अनुवाद
4. **सर्वाधिक आंतरिक विद्रोह**
   - 1336 : हरिहर एवं बुक्का द्वारा विजयनगर राज्य
   - 1347 : अलाउद्दीन बहमन शाह द्वारा बहमनी राज्य
5. **मृत्यु → 20 मार्च, 1351 (थट्टा, सिन्ध)**
   - बदायूँनी : "अंततः लोगों को उससे मुक्ति मिली और उसे लोगों से"

फिरोज शाह तुगलक (1351-1388)

1. सामान्य परिचय
2. फिरोज शाह तुगलक के सुधार
3. फिरोज तुगलक : कला एवं साहित्य
4. फिरोज शाह तुगलक : धार्मिक नीति
5. फिरोज शाह तुगलक : मृत्यु

सामान्य परिचय

1. मूल नाम
2. मोहम्मद बिन तुगलक का चचेरा भाई
   - **कमालदीन फिरोज**
     - पिता - रज्जब
     - माता – अबोहर (पंजाब) के रणमल भाटी की पुत्री बीबी नैला (कोधूम)
3. राज्यारोहण
   - प्रथम - 20 मार्च 1351 (थट्टा सिंध)
   - द्वितीय - अगस्त 1351 (दिल्ली)
   - उपाधि - कासिम अमीर अल मोमनीन (खलीफा द्वारा)
   - अगरोह → नाम परिवर्तन → फतेहाबाद (हरियाणा)
4. मलिक मकबूल
   - **वजीर (मूल नाम : कुन्नू : ब्राह्मण)**)
   - **अफीक -** मृत्यु पर पूरा दिल्ली शोक में डूब गया
   - **MBT -** दिल्ली के महान प्रतापी व वास्तविक सुल्तान

फिरोज शाह तुगलक के सुधार

- प्रशासनिक सुधार
- राजस्व सुधार
- जनकल्याणकारी सुधार

प्रशासनिक सुधार

1. तकाबी ऋण (सोन्धार) माफी : दरबार में ऋण पंजिकाओ को नष्ट किया
2. रक्तपात तथा अमानवीय दंडों का निषेध
   - फतुहात ए फिरोजशाही (FST की आत्मकथा) - भूतकाल में बहुत मुस्लिम रक्त बहाया गया है भविष्य में ऐसा नहीं होगा

राजस्व सुधार

1. 24 कष्टदायक करों के स्थान पर मात्र 4 कर (शरीयत की हनीफ़ीवादी व्याख्या के अनुसार)
   - खराज (भू राजस्व)
   - खम्स (युद्ध में लूटा गया धन)
   - जजिया → ब्राह्मणों पर जजिया लगाने वाला प्रथम सुल्तान
   - जकात → मुसलमानों से लिया जाने वाला कर
2. सिंचाई कर → हक-ए-शर्ब (उपज का 1/10 भाग)
3. उत्पादन के आधार पर कर निर्धारण
   - हिसामुद्दीन एवाज ने निरीक्षण के बाद 6 करोड़ 75 लाख टंका निर्धारित किया
   - मोरलैंड : कर निर्धारण राशि में करने वाला प्रथम मुस्लिम सुल्तान
4. इतलाक प्रथा या वजहदार प्रथा
   - सैनिकों को वेतन प्राप्ति का आज्ञापत्र
   - **वजहदार** - सैनिकों को भूमि का भूपति न मानकर वजहदार माना जाता था, जिसके पास राजस्व व प्रशासनिक शक्तियां नहीं थीं । परन्तु उन्हें राजस्व का 50% दिया जाता था
   - **इतलाक नामा**: वजहदार सैनिकों को दिया गया यही आज्ञापत्र / नियुक्ति पत्र
   - **असफल** - सैनिक 30% नगद पर इतलाक नामा दलालों को सौंप देते थे
5. वंशानुगत अधिकार (स्थायी भू अधिन्यास) → समस्त सैन्य व असैन्य पद वंशानुगत कर दिए

निजामी - इन दो प्रणालियों ने सल्तनत का पतन कर दिया

1. अबवाव: नियमित करों के अलावा सरकार द्वारा लगाए गए सभी अस्थायी और परिस्थितिजन्य कर
   - फिरोज शाह तुगलक ने समाप्त किये।

2. जकात (सदका)
   - मुसलमानों से वसूला जाने वाला कर
   - गरीब मुसलमानों की आवश्यकता को पूरा करना
   - उश्र : मुसलमानों से लिया जाने वाला भूराजस्व

3. खराज
   - किसानों से वसूला जाने वाला भूराजस्व
   - गैर/नवीन मुसलमान - उश्र + खराज

4. खम्स
   - युद्ध में सैनिकों द्वारा लूटा गया
   - शरीयत : राज्य (20%) तथा सैनिक (80%)
   - अलाउद्दीन व MBT : राज्य 80% तथा सैनिक 20%

जजिया

- गैर मुसलमानों (जिम्मी) से लिया जाने वाला कर
- 712AD सिंध - भारत में सर्वप्रथम मुहम्मद बिन कासिम द्वारा
- मुक्त (छूट) - महिलाएं, अवयस्क, भिक्षु, साधु व ब्राह्मण
- FST ने पहली बार ब्राह्मणों पर जजिया लगाया
- कश्मीर शासक जैनुल आबदीन - जजिया बंद (1450)

जनकल्याणकारी सुधार

1. दीवान ए इश्तिहाक → पेंशन विभाग
2. दीवान ए खैरात → गरीब व असहाय लोगों की मदद
3. दीवान ए बंदगान
   - दास कल्याण विभाग
   - सल्तनत में सर्वाधिक दास (1.80 लाख)
4. दारुल शफ़ा (शिफाखाना) → सरकारी अस्पताल
5. रोजगार दफ्तर
   - बेरोजगार युवाओं का पंजीकरण
   - प्रमुख - मलिक नेक
6. शोहरत ए आम (लोक निर्माण विभाग)
   - प्रमुख (दीवान ए ईमारत) : मलिक गाजी
   - सल्तनत में स्थापत्य का सर्वाधिक विकास (भवन निर्माता शासक)
   - पुलजग : रोम शासक ऑगस्टस की तरह
7. नवीन कारखानों की स्थापना
8. दिल्ली के आसपास 1200 बगीचों की स्थापना
   - सुल्तान को 1 लाख 80 हजार टंका की आय
9. नहर, बांध व जलाशयों का निर्माण
   - नहरों के जाल का निर्माण
   - 5 मुख्य नहरें
     - घग्घर से फिरोजाबाद
     - यमुना से फिरोजाबाद
     - सिरमोर से फिरोजाबाद
     - राजवाही नहर
     - **उलुगखानी नहर (सर्वाधिक लंबी : यमुना - हिसार - फिरोजाबाद)**
   - 2 लाख टंका की आय वृद्धि
10. सिरसौती नदी व सलिया नदी को जोड़ने का असफल प्रयास
11. अशोक के स्तंभों का स्थानांतरण
    - टोपरा से दिल्ली
      - स्वर्ण स्तंभ
    - मेरठ से दिल्ली
      - छोटी लाट

सीरत-ए-फ़िरोज़शाही

1. 300 नगरों की स्थापना

- फतेहाबाद (हरियाणा)
- फिरोजाबाद (दिल्ली, फिरोजशाह कोटला दुर्ग)
- जौनपुर (उत्तर प्रदेश)
- फिरोजपुर (पंजाब)

फिरोज शाह तुगलक : कला एवं साहित्य

1. **शिक्षा** :- बड़े पैमाने पर मदरसे स्थापित करवाये, जिनका व्यय राजकोष से वहन होता था।
2. **फिरोज शाह तुगलक (नक्षत्र विज्ञान में रुचि)** :- सल्तनत का जयसिंह
   - **तास घड़ी /जल घड़ी -** 24 मिनट का समय
   - **उस्तुरलाब** - धरातल से ऊँचाई ज्ञात करने हेतु
   - **दालये आहनी -** शिकार में प्रयुक्त यंत्र
3. **अनुवाद विभाग : संस्कृत साहित्य को फारसी भाषा में**
   - **रागदर्पण**: संगीत का ग्रन्थ
   - **दलायत - ए-फिरोजशाही**: दर्शन एवं नक्षत्र विज्ञान
   - नागरकोट अभियान (1361) के दौरान ज्वालामुखी मंदिर से लायी गयी 1300 संस्कृत पुस्तकों का अनुवाद
     - अजीजुद्दीन किरमानी (खालिद खानी)
4. **फारसी साहित्य**
   - **फिक्र-ए-फिरोजशाही:** इस्लामी कानूनों का संग्रह
   - **इंशा -ए-माहरुः** आईन-उल-मुल्क (133 पत्रों का संकलन)
   - **फुतुहात-ए-फिरोजशाही:** फिरोजशाह तुगलक की आत्मकथा

फिरोज शाह तुगलक : धार्मिक नीति

1. एक कट्टर सुन्नी शासक:

- राजव्यय से हजयात्रा - प्रथम बार
- धर्मान्तरण करने पर धन देने की घोषणा की।
- महिलाओं का दरगाह दर्शन हेतु जाने पर प्रतिबन्ध
- खुतबा परम्परा में परिवर्तन : समकालीन के साथ-साथ पुराने सुल्तानों का नाम हालांकि ऐबक का नाम नहीं था
- अपवाद : संगीत तथा मदिरा
- बरनी : यह काल उलेमाओं का स्वर्णकाल था

2. हिंदुओं के प्रति कट्टर धार्मिक नीति:

- ब्राह्मणों पर जजिया कर लगाना
- बुतशिकन (मूर्ति भंजक) : मन्दिरों को ध्वस्त किया
  - जगन्नाथपुरी मंदिर
  - ज्वालामुखी मंदिर
  - मालवा
- अपवाद : गया में सूर्य मन्दिर

फिरोज शाह तुगलक : मृत्यु

1. फिरोजशाह तुगलक की मृत्यु : **सितंबर 1388**
2. अन्य तथ्य
   - फिरोज शाह तुगलक ने अमीरों की शक्ति को बढ़ाया
   - सैन्य शक्ति क्षीण हो गयी
   - भ्रष्टाचार चरम पर
     - **अफीफ : "एक बार सुल्तान स्वयं ने एक स्वर्ण टंका घूस देकर अपना घोड़ा पास करवाया"**
   - मुद्राप्रणाली में सुधार :-
     - टकसाल प्रभारी : कजरशाह
     - चांदी एवं तांबे के मिश्रण से निर्मित सिक्के: **अद्दा एवं विख**
3. महत्वपूर्ण कथन:
   - एल्फिंस्टन - सल्तनत युग अकबर
   - ईश्वरी प्रसाद - फिरोज शाह तुगलक, अकबर का सौवा हिस्सा भी नही था।
   - वुल्जग हेग - अकबर से पूर्व के मुस्लिम शासकों में बेहतर था।
   - बरनी - "दिल्ली सल्तनत का आदर्श सुल्तान था।"

नासिरुद्दीन मुहम्मद II (1394-1412)

1. अन्तिम तुगलक शासक
2. स्वतंत्र प्रान्तीय शक्तियां
   - जौनपुर - मलिक सरवर ने शर्की वंश।
   - फिरोजाबाद - सआदत खां (बारबक)
   - खिज्र खां - उ.प. सीमा
3. 1398-99 में तैमूर आक्रमण हुआ।
4. अमीरों ने आरिज दौलत खां को शासक माना
5. खिज्र खां ने 1414 में सैय्यद वंश स्थापित किया।
   - ***तैमूर का आक्रमण (1398-1399)***
   - बरलास नस्ल की गुर्गिन शाखा का चगताई तुर्क था।
   - राजधानी : समरकंद
   - आत्मकथा - मलफुजात-ए-तैमूरी (तुर्की)
   - खेबर दर्रा : तैमूर ने अपने पोते पीर मुहम्मद के अभियान के बाद 1398 में भारत पर आक्रमण किया।
   - 18 Dec-1398 को मल्लु इकबाल व शाही सेना पराजित हुई। सुल्तान भागकर गुजरात चला गया।
   - मई, 1399 में समरकंद

सैय्यद वंश (1414-1451)

परिचय

1. सल्तनत का एक मात्र → शिया वंश
2. सैय्यद → कुलह दारान (पैगंबर का वंशज)
3. जानकारी → तारीख ए मुबारकशाही
   - याहिया बिन सरहिंदी द्वारा मुबारकशाह को समर्पित
4. **तैमूर लंग :-** " खिज्र खान सैय्यद है तथा इन्हें मुसलमानों पर शासक करने का अधिकार है, इस कारण में इसे रैयत-ए-आला' घोषित करता हूँ।

खिज्र खान (1414-1421)

1. सैय्यद वंश का संस्थापक → खिज्र खान
   - सुल्तान की उपाधि न धारण कर अपने को रैयत-ए-आला की उपाधि
2. खिज्र खान तैमूरलंग का सेनापति था।
3. तैमूरलंग ने खिज्र खान को मुल्तान, लाहौर एवं दिपालपुर का शासक नियुक्त किया।
4. खिज्र खान नियमित रूप से तैमूर के पुत्र शाहरुख को कर भेजता था।
5. मृत्यु → 20 मई, 1421 ई.
6. फरिश्ता → जनप्रिय शासक, मृत्यु पर जनता ने काले वस्त्र पहनकर शोक मनाया
7. कोई नया क्षेत्र नहीं जीता

मुबारक शाह (1421-34)

1. स्वतंत्र शासक
   - शाह की उपाधि
   - अपने नाम का खुतबा
   - सिक्के → नायब-ए-अमीर-उल-मोमीनिन

2. काबुल के शेख अली का आक्रमण
3. यमुना के किनारे नगर बसाया → **मुबारकबाद**
4. वजीर सरवर-उल-मुल्क तथा सिंघपाल द्वारा हत्या

याहिया बिन सरहिन्दी → 'तारीख - ए - मुबारकशाही'

अन्य शासक

1. मुहम्मदशाह (1434-45)
   - मालवा के महमूद खिलजी का आक्रमण
   - बहलोल लोदी द्वारा बचाव
   - बहलोल लोदी
     - पुत्र
     - खान-ए-जहां
     - लाहौर की इक्ता

2. अंतिम शासक
   - अलाउद्दीन आलशाह

लोदी वंश (1451-1526)

सामान्य परिचय

1. सल्तनत का प्रथम अफगान वंश :- गिलजाई (अफगानिस्तान)
2. गजनवी के काल में सल्तनत की सेना में शामिल :- पठान
3. गुलाम वंश के सुल्तान नसीरुद्दीन महमूद के शासन काल में सर्वाधिक अफगान सेना में

बहलोल लोदी (1451-1489)

- 39 वर्ष का शासनकाल
- बहलोल शाह गाजी
- सल्तनत काल में सर्वाधिक समय तक शासन करने वाला सुल्तान

1. **रक्तहीन क्रांति (1451)** → सैय्यद वंश के अंतिम सुल्तान अलाउद्दीन आलमशाह को हटाया
2. अफगानी राजत्व
   - समानता
   - सरदारों(मकसद ए अली) का उच्च स्तरीय सम्मान
   - प्रशासन में कुल को रखना
3. जौनपुर के शर्की शासक मुहम्मदशाह शर्की को पराजित किया
4. उत्तर पश्चिम सीमा में तातार खां का विद्रोह
5. मानसिंह तोमर के विरुद्ध ग्वालियर अभियान
6. सुल्तान हर दिन अपना भोजन व घुड़सवारी किसी न किसी सामंत के घर करता था - फरिश्ता
7. हिंदुओं के प्रति कट्टर नहीं → हिंदू सरदार
   - राय करनसिंह
   - राय प्रतापसिंह
   - राय नरसिंह
8. बहलोली → चांदी सिक्का

फवायद उल फवाद एक प्रसिद्ध सूफी साहित्य कृति है, जिसे शेख निज़ामुद्दीन औलिया के उपदेशों और वार्ताओं (मलफ़ुज़ात) का संकलन माना जाता है। इस पुस्तक को उनके शिष्य अमीर हसन सिज्ज़ी (Khwaja Amir Hasan Sijzi) ने संकलित किया था।

सिकंदर लोदी या निजाम खां (1489-1517)

1. मूल नाम → निजाम खां
2. माता → जैबंद (सुनार)
3. आरंभिक समस्या → अमीरों का विद्रोह
4. **मुख्य कार्य:-**
   - 1504 में आगरा की स्थापना → 1506 में राजधानी
   - आगरा(आगे राह) → 1506 से 1526 तक राजधानी
   - महान कबीर → सिकंदर लोदी के समकालीन
   - 'गुलरुखी' नाम से कविताएं
   - लज्जत ए सिकंदरी → संगीत विद्या के ग्रंथों का फारसी अनुवाद (नाज़िम अहमद)
   - गज ए सिकंदरी
     - 30 इंच
     - अकबर के समय तक (गज-ए-इलाही)
   - शरीयत के अनुसार शासन : धार्मिक कट्टरता : हिंदुओं पर जजिया
5. राजत्व सिद्धांत (अफगान व तुर्क का मिश्रण):
   - राज सिंहासन पर बैठना आरम्भ किया ।
   - सरदारों को नतमस्तक हेतु बाध्य किया।
   - अमीरों को उनकी स्थिति निम्नतर होने का अहसास

6. अन्य तथ्य :-
   - नगरकोट के ज्वालामुखी मंदिर की मूर्ति को तोड़कर उसके टुकड़ों को कसाइयों को मांस तौलने के लिए दिया
   - मुसलमानों को ताजिया निकालने एवं मुसलमान स्त्रियों को पीरों के मजार पर जाने पर प्रतिबंध लगा दिया।
   - गले की बीमारी के कारण सिकन्दर लोदी की मृत्यु 21 नवम्बर, 1517 ई. को हो गयी।
   - दिल्ली की मोठ मस्जिद सिकन्दर लोदी के प्रधानमंत्री (वजीर) मियां भोइया ने 1505 में बनवाई थी।

दोहरे गुंबद की तकनीक का उपयोग

इब्राहिम लोदी (1517-1526)

1. सिकंदर लोदी का ज्येष्ठ पुत्र
2. सिकंदर लोदी → जकात कर समाप्ति
3. **प्रमुख युद्ध:-**
   - भाई जलाल खां का विद्रोह
   - 1517 → खतौली का युद्ध(बूंदी)
     - महाराणा सांगा (✓)

- इब्राहिम लोदी (X)
- 1578 → बाड़ी का युद्ध (धौलपुर)
  - महाराणा सांगा (✓)
  - इब्राहिम लोदी (X)

4. पानीपत का प्रथम युद्ध (21 अप्रैल 1526)
- इब्राहिम लोदी बनाम बाबर
- बाबर की विजय→ मुगल साम्राज्य की स्थापना
- मुगल अफगान वंश की समाप्ति
- एकमात्र सुल्तान जो युद्ध मैदान में मरा
  - मकबरा - पानीपत (हरियाणा)

5. पतन:-
- इब्राहिम लोदी ने अफगान राजत्व का पूर्ण त्याग करके उसके स्थान पर तुर्की राजत्व अपनाया
  - बाबर को भारत पर आक्रमण के लिए निमंत्रण पंजाब के शासक दौलत खाँ लोदी एवं इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ ने दिया था।
  - दौलत खां लोदी (लाहौर) ने अपने पुत्र दिलावर खां को बाबर के पास भारत आक्रमण के साथ भेजा।
  - बाबर ने दिलावर को 'खानखाना' की उपाधि दी।

दिल्ली सल्तनत की वास्तुकला

1) कुव्वत उल इस्लाम मस्जिद	दिल्ली	➤ कुतुबुद्दीन ऐबक ➤ जैन व विष्णु मंदिर के अवशेष ➤ तराईन विजय के बाद
2) कुतुब मीनार ➤ 72.5 मीटर (237 फीट) ➤ 5 मंजिल तथा 379 सीढ़ी	दिल्ली	➤ कुतुबुद्दीन ऐबक व इल्तुतमिश ➤ लाल बलुआ पत्थर तथा संगमरमर
3) अढ़ाई दिन का झोपड़ा मस्जिद	अजमेर	➤ कुतुबुद्दीन ऐबक ➤ विग्रहराज IV के संस्कृत नाटक "हरिकेली"
4) सुल्तानगढ़ी का मकबरा ➤ भारत का प्रथम मकबरा	दिल्ली	➤ द्वारा - इल्तुतमिश ➤ पुत्र - नसीरुद्दीन मुहम्मद

चेरामन जुमा मस्जिद

- चेरामन जुमा मस्जिद का निर्माण **629** ईस्वी में मलिक इब्न दीनार ने करवाया था।
- इसे **भारत की पहली** और दुनिया की दूसरी मस्जिद माना जाता है।
- **कोडुंगल्लूर, त्रिशूर, केरल**

Quwwat-ul-Islam Mosque

Qutub Minar

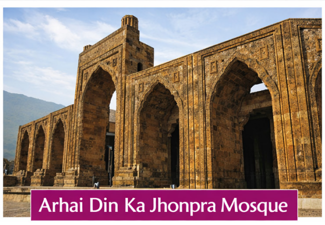

Arhai Din Ka Jhonpra Mosque

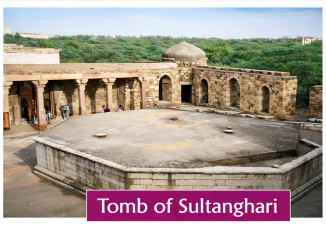

Tomb of Sultanghari

5) इल्तुतमिश का मकबरा	कुतुब परिसर, दिल्ली	इल्तुतमिश
6) अतारकीन दरवाजा	नागौर (RJ)	इल्तुतमिश
7) हौज ए शम्सी	दिल्ली	इल्तुतमिश
8) जामा मस्जिद शम्सी	बदायूं (UP)	इल्तुतमिश
9) बलबन का मकबरा ➤ शुद्ध इस्लामी पद्धति का प्रथम भारत में मकबरा	महरौली, दिल्ली	बलबन
10) लाल महल व शाही कब्रिस्तान	दिल्ली	ग़यासुद्दीन बलबन
11) हौज ए खास (हौज रानी)	दिल्ली	➤ अलाउद्दीन खिलजी ➤ **उद्देश्य:** सिरी के निवासियों को पानी की आपूर्ति ➤ फ़िरोज़ शाह तुगलक का मकबरा
12) सिरी का किला	दिल्ली	➤ अलाउद्दीन खिलजी ने 1303 में मंगोलों के आक्रमण से शहर की रक्षा के लिए ➤ उपभाग - अलाई किला, हजार सितून महल (हज़ार खंबा)
13) अलाई दरवाजा	कुतुब परिसर दिल्ली	➤ अलाउद्दीन खिलजी (1311) ➤ कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का दक्षिणी प्रवेश द्वार ➤ लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर : इस्लामी वास्तुकला का सुंदर रत्न
14) जमैयत खाना मस्जिद	दिल्ली	➤ अलाउद्दीन खिलजी के पुत्र खिज्र खान ने 1315-1325 ➤ दिल्ली के निज़ामुद्दीन दरगाह परिसर में
15) अलाई मीनार	दिल्ली	➤ अलाउद्दीन खिलजी : अधूरी कुतुबमीनार
16) उखा मस्जिद	राजस्थान के बयाना	➤ इल्तुतमिश और मुबारक शाह खिलजी
17) अलाउद्दीन का मकबरा	कुतुब मीनार परिसर	➤ मुबारकशाह
18) तुगलकाबाद	तीसरी दिल्ली	➤ गयासुद्दीन तुगलक
19) जहांपनाहबाद	चौथी दिल्ली	➤ मुहम्मद बिन तुगलक
20) निजामुद्दीन औलिया का मकबरा	दिल्ली	➤ 1325 में MBT (संगमरमर) ➤ फिरोज शाह तुगलक द्वारा स्वर्ण प्लेट
21) बेगमपुरी मस्जिद	दिल्ली	➤ मुहम्मद बिन तुगलक
22) बाराखंभा स्मारक	दिल्ली	➤ मुहम्मद बिन तुगलक
23) फिरोजाबाद	पांचवी दिल्ली	➤ फिरोज शाह तुगलक
24) फिरोज शाह तुगलक का मकबरा	दिल्ली	➤ फिरोज शाह तुगलक
25) शेख कबीरुद्दीन का मकबरा	दिल्ली	➤ नसीरुद्दीन मुहम्मद तुगलक
26) खान ए जहाँ तेलंगानी का मकबरा	दिल्ली	➤ FST के वजीर मलिक मकबूल तिलंगानी के पुत्र जूना शाह ➤ भारत का प्रथम अष्टकोणीय मकबरा

27) खिड़की मस्जिद	दिल्ली	➤ FST के प्रधानमंत्री जुनैन शाह (जूना शाह)
28) काली मस्जिद	दिल्ली	➤ FST के प्रधानमंत्री जुनैन शाह (जूना शाह)
29) मुबारक शाह सैय्यद का मकबरा	दिल्ली	➤ बड़ी गुंबद : अष्टकोणीय
30) सिकंदर लोदी का मकबरा	लोदी गार्डन दिल्ली	➤ सिकंदर लोदी के पुत्र इब्राहिम लोदी द्वारा ➤ भारतीय उपमहाद्वीप का पहला उद्यान मकबरा ➤ दोहरे गुंबद का प्रथम प्रयोग
31) मोठ मस्जिद	दिल्ली	➤ सिकंदर लोदी के वजीर मियां भुआ (1505)) ➤ लाल धूसर व सफेद पत्थर

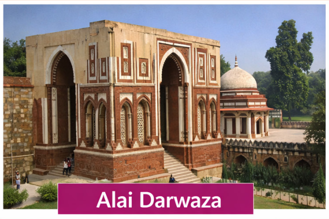
Alai Darwaza

Alai Minar

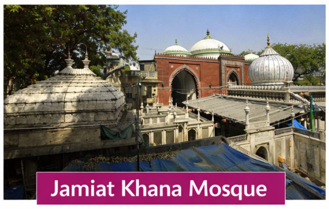
Jamiat Khana Mosque

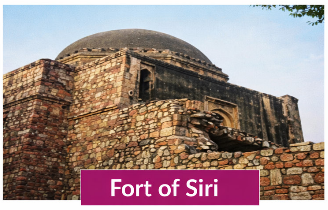
Fort of Siri

यहाँ दिल्ली के सात शहरों का उल्लेख किया गया है, जिनके आधार पर दिल्ली को 5 बार बसाया गया था:

1. इंद्रप्रस्थ: महाभारत के काल में पांडवों द्वारा बसाया गया दिल्ली का पहला नाम इंद्रप्रस्थ है।
2. लालकोट/धिल्लिका: तोमर राजपूतों ने दिल्ली को पहली बार एक राज्य की राजधानी बनाया और उसे "धिल्लिका" नाम दिया।
3. सिरी का शहर: अलाउद्दीन खिलजी ने सिरी शहर की स्थापना की थी, जिसे दिल्ली सल्तनत का दूसरा शहर कहा जाता है।
4. तुगलकाबाद: गयासुद्दीन तुगलक ने 1320 में तुगलकाबाद शहर का निर्माण करवाया, जिसे दिल्ली सल्तनत का तीसरा शहर माना जाता है।
5. जहाँपनाह: मुहम्मद बिन तुगलक ने जहाँपनाह को बनाया, जो दिल्ली सल्तनत का चौथा शहर था।
6. फिरोजाबाद: फिरोज शाह तुगलक ने फिरोजाबाद शहर का निर्माण करवाया, जो दिल्ली का पाँचवाँ शहर है।
7. शाहजहानाबाद: शाहजहाँ ने 1639-1648 के बीच शाहजहानाबाद शहर का निर्माण करवाया था।

सिकंदर लोदी का

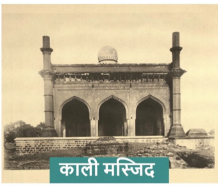
काली मस्जिद

इब्राहिम लोदी का

खिड़की मस्जिद

दिल्ली सल्तनत का प्रशासन

केंद्रीय प्रशासन

1. भारतीय + अरबी + ईरानी + तुर्की + मंगोल + अफगानी प्रभाव
2. सर्वोच्च → सुल्तान → मजलिस-ए-खलवत (मंत्रिपरिषद)
3. बार-ए-ख़ास → विशेष दरबार / निजी दरबार
4. बार-ए-आजम → सार्वजनिक दरबार

सल्तनत → सुल्तान
विलायत/इक्ता(प्रांत)- इक्ता / वली
शिक (सरकार) → शिकदार
परगना → आमिल
ग्राम समूह → अमीर-ए-सदा
Village → खुत/मुकद्दम

मुहम्मद बिन तुगलक ने 'अमीर-ए-सदा' नामक प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना की।यह सौ गांवों या एक शहर के प्रशासन का प्रमुख होता था

प्रमुख विभाग

1. दीवान ए विजारत→ वजीर (प्रमुख)

- सबसे विस्तृत विभाग
- प्रेरणा : अब्बासी खलीफा
- गजनवी का वजीर : अब्बास फजल बिन अहमद
- कार्य → वित्त व राजस्व
- तुगलक काल→ विजारत का स्वर्ण काल (FST)
- अधीनस्थ विभाग
  - **मुशरिफ-ए-मुमालिक** - महालेखाकार ('दीवान-ए-अशरफ')
  - **मजुअमदार** - ऋण जारी करने,
  - **खजांची** - कोषाध्यक्ष
  - **दीवान-ए-वकूफ** - जलालुद्दीन खिलजी ने । इसका कार्य व्यय के कागजातों की देखभाल करना ।
  - **दीवान-ए- मुस्तखराज** - अलाउद्दीन खिलजी द्वारा। कार्य दोआब के अधिकारियों के बकाया खराज का ब्यौरा तैयार करना तथा उनकी वसूली करना था।
  - **दीवान-ए-कोही** - यह MBT द्वारा गठित कृषि विभाग। कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल बढ़ाना था।

विभाग	***प्रमुख***	***विशेषता***
1. दीवान-ए-विजारत	वजीर	राजस्व व सामान्य प्रशासन
2. दीवान-ए-अर्ज	आरिज-ए-मुमालिक	➤ सैन्य विभाग ➤ बलबन द्वारा स्थापना
3. दीवान-ए-इंशा	दबीर-ए-मुमालिक	➤ पत्राचार विभाग
4. दीवान-ए-रसातल	सद्र-उस-सुदूर	➤ विदेश विभाग/ धार्मिक
5. न्याय	काजी-उल-कुजात	➤ Justice
6. गुप्तचर	बरीद-ए-मुमालिक	

विभाग	***बनाने वाला सुल्तान***
दीवान-ए-मुस्तखराज (वित्त विभाग)	अलाउद्दीन खिलजी
दीवान-ए-कोही (कृषि विभाग)	मुहम्मद बिन तुगलक
दीवान-ए-अर्ज (सैन्य विभाग)	बलबन
दीवान-ए-बंदगान	फिरोजशाह तुगलक
दीवान-ए-खैरात	फिरोजशाह तुगलक
दीवान-ए-इस्तिहाक	फिरोजशाह तुगलक

मंत्री विभाग	***सल्तनत***
1) वजीर (प्रधानमंत्री)	राजस्व विभाग का प्रमुख

2) मुशरिफ-ए-मुमालिक (महालेखाकार)	प्रांतों एवं अन्य विभागों से प्राप्त आय एवं व्यय का लेखा-जोखा
3) मजमुआदर	उधार दिए गए धन का हिसाब रखना
4) खजीन	कोषाध्यक्ष
5) आरिज-ए-मुमालिक	दीवान-ए-अर्ज अथवा सैन्य विभाग का प्रमुख
6) सद्र-उस-सुदूर	धर्म विभाग एवं दान विभाग का प्रमुख
7) काजी-उल्-कजात	सुल्तान के बाद न्याय का सर्वोच्च अधिकारी
8) बरीद-ए-मुमालिक	गुप्तचर विभाग का प्रमुख अधिकारी
9) वकील-ए-दर	सुल्तान की व्यक्तिगत सेवाओं की देखभाल
10) दीवान-ए-खैरात	दान विभाग
11) दीवान-ए-बंदगान	दास विभाग
12) दीवान-ए-इस्तिहाक	पेंशन विभाग
13) वकील-ए-दर	शाही महल एवं सुल्तान की व्यक्तिगत सेवाओं की देखभाल
14) अमीर-ए-हाजिब या बारबक	दरबारी शिष्टाचार : सुल्तान से मिलने वालों की जाँच-पड़ताल

अन्य तथ्य

- सुल्तान की स्थायी सेना को **खासखेल** नाम दिया गया था। था।
- **मंगोल सेना के वर्गीकरण की दशमलव प्रणाली** को सल्तनतकालीन सैन्य व्यवस्था का आधार बनाया गया था।
- सल्तनत काल में अच्छी नस्ल के घोड़े तुर्की, अरब एवं रूस से मँगाए जाते थे।
- हाथी मुख्यत: बंगाल से मँगाए जाते थे।
- **मुक्ताई**: लगान निर्धारित करने की **मिश्रित प्रणाली**
- ऊंचे धार्मिक और न्यायिक पदों पर बैठे व्यक्तियों (उलेमा) : 'दस्तार बन्दान'
- मालवा विजय के उपलक्ष्य में मेवाड के राणा कुंभा ने चित्तौड़गढ़ में कीर्ति स्तंभ का निर्माण कराया था। कीर्ति स्तंभ का निर्माण जैता ने किया था। जबकि कीर्ति स्तंभ के प्रशस्तिकार अत्रि और महेश थे।

स्थान	***प्रसिद्धि के कारण***
सरसुती	अच्छी किस्म के चावल के लिए
अन्हिवाड़ा	व्यापारियों का तीर्थ -स्थल के रूप में।
सतगाँव	रेशमी रजाइयों के लिए।
आगरा	नील उत्पादन के लिए।
बनारस	सोने-चाँदी व जड़ी काम के लिए।